3

''पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (1 पतरस 1:13-25)

बाइबल छात्र के लिए स्पष्ट कल्पना एक बहुमूल्य पूंजी है। इसके साथ वह लगभग ऐसे संसार में प्रवेश कर उसे समझ सकता है, जिसका बिना इसके उसे बिल्कुल ही पता नहीं होता। समुरने, इफिसुस या पिरगमुन जैसे एशिया माइनर के बड़े नगरों में से एक में, पहली सदी के एशिया माइनर में पतरस के मूल पाठक होने की कल्पना करें। पहली सदी के एशिया माइनर में ही हम 1 पतरस के शब्दों के बल को समझ सकते हैं।

संसार जिसमें आप आए हैं, इसमें कलीसिया नई है। मसीह का क्रूस दिया जाना अभी भी लोगों को याद है। आपको अपने नगर में आने वाले पहले प्रचारक का नाम याद है। पहली बार तो आप उसे केवल उत्सुकता वश मिले थे, परन्तु आप हैरान रह गए कि उसकी बातें और संदेश प्रभावशाली था। उसने कहा कि केवल एक ही परमेश्वर है और सब ने उसके विरुद्ध पाप किया है और उसके शत्रु बन गए हैं। उसने यह भी कहा कि परमेश्वर ने एक उद्धारकर्त्ता अर्थात मसीह को भेजा था। आशा और प्रेम का संदेश सुनने से आप मसीही बन गए।

दस-पन्द्रह साल यूं ही बीत गए। आपने और अन्य लोगों ने अपने समुदाय की धार्मिक परम्पराओं को छोड़ दिया, जिस कारण आपके कुछ मित्र आपसे नफ़रत करने लगे हैं। रिश्तेदार और पड़ोसी आपको मूर्ख कहते हैं; नगर अधिकारियों ने आपसे उस परमेश्वर के विषय में पूछताछ की है, जिसकी आप सेवा करते हैं। अपने कुछ साथी मसीहियों को मसीह का इनकार करके विश्वासी लोगों के लिए जीवन कष्टदायक बनाते देखकर पीड़ादायक लगा।

इस संसार में जहां मसीही लोगों को प्रोत्साहन नहीं मिलता; 1 पतरस जैसे पत्र का अर्थ आत्मिक जीवन और मृत्यु में अन्तर हो सकता है। पतरस का संदेश बड़ा सीधा है। आपको और आपके साथी मसीहियों को जोश में झंडा नहीं गाड़ना चाहिए। पत्री कहती है कि ''कमर बान्धकर, और सचेत रहकर ...'' काम करना आवश्यक है (1:13)। परमेश्वर अपने लोगों से पवित्रता की उम्मीद करता है और इससे कम बिल्कुल नहीं चाहता। 1:16 में पतरस ने लैव्यव्यवस्था से दोहराते हुए ज़ोर दिया: ''पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 11:44; 19:2; 20:7)।

पवित्रता! साफ़ कहें तो यह वह शब्द है, जिससे सम्बन्ध बनाना इन मसीही लोगों के लिए कठिन है। वे पवित्र कैसे हो सकते हैं? पतरस ने उन तीन अनुभवों जिनसे उसके पाठकों के जीवन में आशीष मिली यानी आज्ञापालन, छुटकारा और नए जन्म की ओर ध्यान दिलाकर इस प्रश्न का उत्तर दिया है।

पवित्र बच्चों की तरह आज्ञाकारी (1:13-17)

हम में से अधिकतर लोगों के लिए कष्ट और मसीहियत का सम्बन्ध व्यवहार से बढ़कर पुस्तकों में निकट है। पतरस के पत्र के आरम्भिक पाठकों के लिए यह अलग था। जब किसी भाई को बीच बाज़ार में खींचकर लाया जाता, उसकी पीठ नंगी की जाती, और उसे किसी खम्भे के साथ झुकाकर पीटा जाता तो कष्ट उसके लिए वास्तविक था। जब किसी बहन को अपने माता-पिता द्वारा, परिवार के लोगों द्वारा जो अब उससे बात नहीं करते और उन बच्चों से जिनके मित्र उनसे छूट गए हैं, समाज से निकाला जाता, तो उनका जीवन कष्टदायक होता था। पतरस के आरम्भिक पाठक पीछे मुड़कर कालांतर में मसीही लोगों द्वारा सहे जाने वाले कष्ट पर अपने सिर नहीं हिला सकते थे। वे अपनी पीठ के दाग ही दिखा सकते थे।

पतरस ने दागों और पीड़ा पर कैसे प्रतिक्रिया दी? उसने मसीही लोगों को परमेश्वर के आज्ञाकारी होने के लिए कहा (1:14)। उसने उन से नये जोश के साथ पाप को अपने जीवनों में से निकाल फैंकने और पवित्र बने रहने का आग्रह किया। उसने कहा कि कष्ट उन्हें आग में तपाए हुए सोने की तरह शुद्ध कर देगा (1:7)। 1 पतरस में हमें मन की कमज़ोरी नहीं मिलती। पतरस यह कहते प्रतीत होता है, ''यदि शत्रु की लड़ाई की ही इच्छा है तो हम उससे अवश्य लड़ेंगे। हम बुराई का सामना पवित्रता के साथ करेंगे।''

यह संयोग होना कठिन है कि पतरस ने आज्ञापालन और पवित्रता को पास-पास रखा हो (1:14, 15)। पवित्रता मन की स्थिति नहीं, बल्कि जीवन का ढंग है। पवित्रता के लिए कम से कम दो बातें आवश्यक हैं। पहली तो यह कि इसमें दीनता आवश्यक है। हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि अपने आपको चलाने के लिए न तो हमारे पास संसाधन हैं और न बुद्धि। दूसरा यह चाहती है कि इस पर ज़ोर दिया जाए। हमें बिना किसी भय के अपने आप को किसी दूसरे की अगुआई में देने के योग्य होना आवश्यक है। कोई आश्चर्य नहीं कि यह कहते हुए कि ''आज्ञाकारी बालकों के समान ...'' (1:14) कहते हुए पतरस ने एक बच्चे को ध्यान में रखा।

अफ़सोस की बात है कि कुछ मसीही लोगों ने गलत अर्थ वाली शिष्यता का अर्थ यह निकाल लिया है कि हमें उसको, जिसने हमारी पवित्रता का जिम्मा लिया है, बिना कोई सवाल किए सौंप देना चाहिए। बच्चों जैसे आज्ञापालन में जिसकी पतरस ने सराहना की, दीनता और परमेश्वर के साथ मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध में भरोसा होना आवश्यक है। किसी दूसरे को अपने जीवनों को चलाने के लिए परमेश्वर के विशेषाधिकारों को लेने का अर्थ मूर्तिपूजा के साथ चोंचले करना है। यह पवित्रता के लिए संघर्ष को त्याग देना है। भरोसा, दीनता और आज्ञापालन, निष्क्रियता के विरोधी हैं। मसीह का चेला परमेश्वर की इच्छा का पता लगाकर उसमें जीवन बिताता है।

इन मसीही लोगों के वर्तमान जीवनों की भलाई पुराने जीवनों की खूबियों से उलट थी, जिनका उन्हें पता था। उनके वर्तमान जीवनों की श्रेष्ठता अपने आप दिखाई देती थी। यही कारण है कि पतरस के पाठक इस बात को समझ नहीं पाए कि संसार उनका मज़ाक उड़ाकर उन्हें घटिया क्यों मानता है। परमेश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया? उन्हें कष्ट क्यों उठाना पड़ा? सवाल आज के नहीं हैं। निराशा में से उपजी अत्यावश्यकता में अय्यूब ने पूछा था, ''सर्वशक्तिमान न्याय का समय क्यों नहीं ठहराता? जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं, वे ऐसे दिनों की राह बेकार

में क्यों देखें?'' (अय्यूब 24:1; NIV)। घमण्डी व्यक्ति की समृद्धि को देखने के बाद भजन लिखने वाले ने माना, ''मेरे कदम तो फिसल ही गए थे, मेरे डग फिसलने ही पर थे'' (भजन संहिता 73:2, 3, NIV)।

कष्ट के विषय में पतरस की समझ अय्यूब के मित्रों की समझ से मेल खाती है। एलीपज़ (अय्यूब 5:17) और एलीहू (अय्यूब 33:19) ने तर्क दिया था कि कष्ट परमेश्वर के सेवकों को सुधारने और सहनशक्ति देने के लिए था। पतरस का सुझाव कि कष्ट सोने को आग में तपाने की तरह मसीही लोगों के विश्वास को निखारने जैसा ही उत्तर है। प्रत्येक कष्ट परमेश्वर की ओर से ताड़ना नहीं होती, तौ भी यह मसीही लोगों के लाभ के लिए हो सकता है। अन्ततः कष्ट के लिए पतरस का उत्तर यह याद दिलाता है कि परमेश्वर बिना पक्षपात के न्याय करेगा (1:17)। इस घटना में उसका उत्तर भजन संहिता 73 से मेल खाता है। भजन लिखने वाले ने निष्कर्ष निकाला कि दुष्टों की समृद्धि थोड़ी देर की है। एक अर्थ में पतरस ने भी यही अर्थ निकाला।

परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों को उनका प्रतिफल मिलेगा और दुष्ट लोग परमेश्वर के क्रोध का स्वाद चखेंगे, जब अन्त के दिन हर गलती को सुधार दिया जाएगा। अभी के लिए पवित्र बनने के लिए कष्ट के मुद्दे को सुलझाना अनावश्यक है। पतरस अपने पाठकों से कह रहा था कि ''इस संसार में तुम परदेसी हो।'' ''भय'' और ''अपने परदेसी होने का समय'' शब्दों में दीनता, भरोसा और आज्ञापालन मिलते हैं। एक अर्थ में पतरस ने कहा, ''हो सकता है जीवन के जटिल मुद्दों पर तुम्हें हर उत्तर न मिले, परन्तु तुम्हें यह उत्तर अवश्य मिल गया है कि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर तुम्हें जानता है, तुमसे प्रेम करता है और उसने तुम्हें छुड़ाया है।''

मसीह के लहू से छुड़ाए गए (1:18-21)

1:14 और 1:18 दोनों जगह पतरस ने अपने पाठकों के जीवन के पुराने ढंगों की बात की। आयत 14 उनकी पुरानी इच्छाओं की अज्ञानता और आयत 18 जीवन के उनके व्यर्थ ढंग की बात करती है, जो उन्हें अपने पूर्वजों से मीरास में मिला था। परमेश्वर के बिना लोगों के जीवन अज्ञानता और लक्ष्यहीनता की ओर अर्थात पेट की भूख मिटाने में लगे रहते हैं, जो कभी खत्म नहीं होगी।

हमारे समकालीन संसार द्वारा कुछ बातें जो होशियार, आधुनिक और साहसपूर्ण लगती हैं, वे केवल उसी अज्ञानता का विस्तार हैं, जिसने सदियों से जीवन को कुचलकर इसके आनन्द को छाप डाला है। बिना सोचे पेट की बात मानना इसकी गुलामी करना है और यह खतरनाक है। बाद में पतरस ने उनके विषय में लिखा, जो स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा करते थे, जबकि वे भ्रष्टता के दास थे, ''... आदमी जिसके कब्ज़े में होता है, उसी का दास है'' (2 पतरस 2:19; NIV)।

पतरस ने इन मसीही लोगों के पुराने दासतापूर्ण, कमज़ोर करने वाले जीवनों और मसीह में मिली स्वतन्त्रता में स्पष्ट अन्तर किया। पतरस ने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें छुड़ाया जा चुका था। अनुवादित शब्द ''छुड़ाया'' का इस्तेमाल यूनानी संसार में सांसारिक लेखकों द्वारा छुड़ौती के लिए दी जाने वाली राशि के रूप में किया जाता था। कोई धनवान या शक्तिशाली व्यक्ति टापुओं की टोली या राहजनियों के दल के पास बहुत बड़ी राशि लेकर आ सकता है। रोमी इतिहासकार सितोनियुस ने एक घटना जोड़ी, जो 74 ईस्वी पूर्व में जूलियस सीज़र के जीवन में घटी थी।

जवान सीज़र एजियन समुद्र में रोड़े नामक एक टापू में वाकपटुता के अध्ययन के लिए जा रहा था। जब उसका जहाज़ डाकुओं के काबू आ गया तो सीज़र ने मिलेतुस नगर में अपनी छुड़ौती के लिए सोने के पचास तोड़े भेजने को कहा। मिलेतुस ने वह बड़ी राशि चुकाई और डाकुओं ने सीज़र को छोड़ दिया।

धनवान और बड़े लोगों की छुड़ौती की कीमत चांदी और सोने में होती थी, परन्तु पतरस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि शरीर की इच्छाओं की दासता से उनकी छुड़ौती की कीमत उससे कहीं अधिक मूल्यवान अर्थात परमेश्वर के पुत्र का लहू देकर दी गई है (1:18, 19। पौलुस ने इसे इस प्रकार लिखा है, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पापी ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)।

पतरस ने मसीह को निर्दोष और निष्कलंक मेमना कहा है (1:19)। प्रकाशितवाक्य 5:8 में ''मेमना'' के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल मसीह के लिए हुआ है, परन्तु यूनानी भाषा में यह शब्द थोड़ा सा बदला गया है, जिससे इसका अर्थ ''छोटा मेमना'' हो जाता है। मसीह की बात करते हुए, नये नियम के लेखकों ने सबसे प्रिय शब्दों का इस्तेमाल किया। प्रेरितों के काम (3:13, 26; 4:27, 30) में कई बार उसे ''सेवक'' कहा गया है (KJV में प्रेरितों 3:13, 26 में ''पुत्र'' है और 4:27, 30 में इस शब्द का अनुवाद ''बच्चा'' हुआ है)। पहली सदी के अन्त और दूसरी सदी के आरम्भ के मसीही लोगों ने प्रभु के विषय में लिखते समय अक्सर उसे ''पुत्र'' कहा। ''मेमना'' और ''पुत्र'' जैसे शब्द हमें मसीह के बहुमूल्य और निर्दोष भोला होने पर विचार करने को विवश करते हैं।

पौलुस ने मसीह को हमारा फसह कहा (1 कुरिन्थियों 5:7)। मसीह और फसह के बलिदान में यही सम्बन्ध यूहन्ना 19:36 में देखा जाता है, जहां यूहन्ना ने लिखा कि उसके शरीर की कोई हड्डी तोड़ी नहीं गई। 1:18-21 में फसह का कोई स्पष्ट हवाला तो नहीं है, परन्तु पतरस का ''निर्दोष और निष्कलंक'' का उल्लेख हमें स्वाभाविक ही निर्गमन 12 में मेमने के काटे जाने और परमेश्वर के उस घर के ऊपर से गुज़रने की ओर ले जाता है, जहां मेमने का लहू रखा होता था। मेमने का लहू पापी के छुटकारे के लिए दिया गया, इसने उसे पूर्ण बनाया और उसे नाश करने वाले अर्थात शैतान की शक्ति से छुड़ाया।

मसीह में परमेश्वर के छुटकारे का यह महान कार्य संसार की नींव के समय से ही था, परन्तु अब उस अन्तिम समय अर्थात अन्तिम दिनों में इसे प्रकट किया गया है (1:20)। सम्पूर्ण पुराना नियम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने का आभास कराता है। दाऊद के वंश अर्थात उस शाखा ने फिर से सिंहासन पर बैठना था और परमेश्वर ने अपने लोगों पर शासन करना था। एक नई वाचा लोगों के हृदयों पर लिखी जानी थी (यिर्मयाह 31:33)। चीते और छोटे मेमने ने इकट्ठे लेटना था (यशायाह 11:6)। पतरस ने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाएं अन्त के समयों में उनके द्वारा प्रकट हुई हैं। उसने उन्हें यकीन दिलाया कि वे सब चीज़ों के वारिस हैं। मसीह के जी उठने के द्वारा मसीही लोगों को दिया जाने वाला विश्वास और आशा स्वाभाविक ही पवित्रता उत्पन्न करते हैं।

अविनाशी बीज से उत्पन्न हुए (1:22-25)

1 पतरस (3:21) में ''बपतिस्मा'' शब्द चाहे एक ही बार आया है, परन्तु बाइबल के सतर्क छात्रों ने बहुत पहले से इस बात को समझ लिया कि इस पत्री का मुख्य विषय बपतिस्मा ही है। कई तो यह साबित करने तक चले गए हैं कि यह पत्र किसी नये परिवर्तित व्यक्ति द्वारा बपतिस्मा लेने के समय औपचारिक तौर पर आरम्भिक कलीसिया के अगुओं द्वारा दोहराए गए शब्दों को ही लेना है। जब कोई बपतिस्मा लेता था, तो उसका नया जन्म हो जाता था। यह कहकर कि मसीही व्यक्ति ''जीवन के नयेपन'' में चलने के लिए बपतिस्मे से निकलता है (रोमियों 6:4) पतरस एक कदम आगे बढ़ गया। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि पतरस ने मसीही बपतिस्मे को (जैसा उसने 1:3 में किया था) ''नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से ... जन्म'' से मिलाया (1:23)।

पतरस ने ऐसा कोई सुझाव नहीं देना चाहा कि मसीही लोग उद्धार को कमाते हैं, ''... तुम ने ... सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है ...'' (1:22)। मसीह के जी उठने के बाद के पहले पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने लोगों से आग्रह किया, ''अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ!'' (प्रेरितों 2:40)। परमेश्वर के अनुग्रह से, क्षमा और अनन्त जीवन देने की पेशकश की गई है। यह सुझाव देने के लिए कि सुनने वाले के लिए प्रस्तुत किए गए दान तक पहुंचने और उसे स्वीकार करने के लिए सुनना आवश्यक है, यह अनुग्रह की शिक्षा से समझौता नहीं करता। पतरस के कहने का यही अर्थ था जब उसने उन्हें बताया कि ''तुम ने अपने मनों को पवित्र किया है।'' उन्होंने आशा और अनुग्रह के संदेश पर विश्वास किया था और केवल वही किया था, जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी थी।

पवित्रता नया जन्म पाने के विचार से कभी अधिक दूर नहीं है। बीज अविनाशी है और इससे विश्वास करने वाले को शुद्ध किया जाता है। क्या एशिया माइनर के लोगों ने समझ लिया कि अपने जीवनों को पवित्र बनाने के लिए कहने से पतरस का क्या अर्थ था? क्या उन्हें अपने संसार के मूल्यों और व्यवहार को चुनौती देने की प्रेरणा और साहस मिला? किसी रॉक या देशीय या पश्चिमी गीतों के शब्दों को सुनना एक शिक्षादायक अनुभव हो सकता है। फौरन आनन्द समय की मांग होती है। हमें किसी और बात की प्रतीक्षा न करने के लिए कहा जाता है। प्रसिद्ध टीवी कार्यक्रम तुरन्त संतुष्टि के लिए ज़ोर देते हैं। लाखों लोग जो अच्छा लगता है, उसे उसी समय करने से अधिक नहीं सोचते।

मसीही लोग एक ऐसे संसार में रहते हैं यानी मसीही लोग वे हैं जिन्हें पवित्र बनना चाहिए। पतरस के पाठकों के लिए मसीही लोगों के रूप में पवित्र जीवनों और अविश्वास के उनके पुराने जीवनों के बीच की कोई अस्पष्ट सीमा नहीं थी। शायद हमारा संसार अलग है। पवित्र और अपवित्र के बीच की रेखा आम तौर पर धुंधली हो जाती है। मसीही लोग कई बार उस सीमा को धुंधला करने में योगदान देते हैं। जब संसार पुकारता है तो कई लोग कहते हैं, ''बेशक हम इतने सारे मनोरंजन से अपने आपको अलग नहीं कर सकते, तो क्या करना चाहिए? हमें चाहिए कि पवित्रता की इस बात को इतनी दूर न ले जाएं।'' कई मसीही लोग इस बात से डरने लगते हैं कि संसार उन्हें आधुनिक उपनाम में सबसे खतरनाक नाम ''पागल'' के ऊपर न लटका दे। कई इस बात से डरने लगते हैं कि किसी को लगेगा कि वे राजा की सन्तान होने के प्रति गंभीर हैं।

आज कामुकता की ओर व्यापक आकर्षण को देखकर अधिकतर मसीही निराश और हताश होते हैं। प्राचीन इस्राएल को कहे यहोशू के शब्द आज की कलीसिया पर लागू हो सकते हैं: ''तुमसे यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखने वाला ईश्वर है, ...'' (यहोशू 24:19)। क्या हम पवित्र बनने की चुनौती के लिए तैयार हैं? मुझे नहीं मालूम कि हम इस प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे। मूसा ने इसे इस प्रकार दिया: ''देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिए अनोखी, और न दूर है। ... परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है ताकि तू इस पर चले'' (व्यवस्थाविवरण 30:11, 14)।

पतरस ने दो स्रोत बताए जिनसे अपवित्र संसार में पवित्र बनने की कोशिश करने वाले मसीही लोग ताज़गी ले सकते हैं। पहली बार, पवित्रता साथी सहयात्रियों से जो समूह में पवित्र नगर को चाहते हैं भाइचारे का प्रेम देने और पाने में समर्थन पाती है। पतरस को मालूम था कि उसके पाठकों की शुद्धता और आज्ञापालन सच्चे प्रेम के कारण था और उसने उन्हें और समझाया कि ''तन-मन लगाकर एक-दूसरे से अधिक प्रेम रखो'' (1:22)।

दूसरा, पवित्रता स्थाई है, जबकि सम्मान और संसार की वस्तुएं अस्थाई हैं। पतरस ने कहा, ''अविनाशी बीज से जन्म पाया है'' (1:23)। फिर उसने यशायाह 40:6-8 में से एक सुन्दर वचन उद्धृत किया, जो भजन संहिता 103:15, 16 में सुनाई देता है ''क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल की नाईं है: घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है। परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा'' (1:24, 25क)।

सारांश

1:13-25 में पतरस ने अपने पाठकों को पवित्र बनने का आग्रह किया और पवित्र होने के तीन ढंग आज्ञापालन, छुटकारा, नया जन्म बताए। पतरस के पाठकों का संसार कुछ-कुछ आज के संसार की तरह ही था और अधिकतर मामलों में आज के लोगों से अलग था। पहली शताब्दी के अन्तिम भाग में एशिया माइनर के संसार में मसीही और गैर-मसीही लोगों के बीच की रेखा साफ़ खींची गई थी। मसीही लोगों का उपहास किया जाता था और कई बार उन्हें केवल इसी लिए शारीरिक प्रताड़ना मिलती थी कि उन्हें ''मसीह प्रभु है'' कहने की हिम्मत कैसे हुई। पतरस ने मसीही लोगों को शारीरिक और भावनात्मक बुराई से छुड़ाने की पेशकश नहीं की। इसके विपरीत उसने कहा, कि मामला बिगड़ सकता है। जो भी हो जाए, वह उन्हें बताना चाहता था कि वे परमेश्वर के लोग हैं और परमेश्वर के लोग पवित्र हैं।

बीसवीं शताब्दी के संसार से बढ़कर प्रभु का नाम अपनाने वालों के पवित्र जीवनों की आवश्यकता और किसी को नहीं थी। समझौतों या बहानों के लिए कोई जगह नहीं है। कुछ आधुनिक मसीही लोगों को (कम से कम अमेरिका में) मसीही होने के शारीरिक प्रतिशोधों से डरना चाहिए। आज पाप ने हमें अपनी बाहों में लिया हुआ है और हम से कहता है कि हम केवल मनुष्य हैं, यानी हम अपने आप से अधिक उम्मीद नहीं कर सकते।

मसीही लोगों को एक-दूसरे की आवश्यकता है। हमें सच्चे मन से एक-दूसरे से प्रेम रखना आवश्यक है। वास्तव में मसीह ने अपने लोगों को एक पवित्र भवन में इस प्रकार बनाया है, जिसमें हम एक-दूसरे से सहायता व सामर्थ पा सकते हैं। उसकी बनाई इमारत पक्की है, घास

की तरह नहीं जो सूखकर मुरझा जाती है। अध्याय 2 में पतरस ने उस इमारत के विषय में जो हाथों के बनाए पत्थरों से नहीं बल्कि जीवित पत्थरों से बनी है, लिखा। अभी के लिए हम केवल इतना समझ लें कि उन पुरुषों और स्त्रियों से जिन्होंने अपनी पुरानी अज्ञानता को उतार दिया है और मेमने के लहू से छुड़ाए गए हैं, पवित्र मन्दिर बनाया जाता है।